गीत प्राणों में जगे , पर भावना में बह गए

एस. भारती
द्वारा प्रवीण कुमार
राजसं, रूड़की ।

गीत प्राणों में जगे , पर भावना में बह गए
एक थी मन की कसक , जो साधनाओं में ढली ,
कल्पनाओं में पली,
पंथ था मुझको अपरिचित , मैं नहीं अब तक चली
प्रेम की संकरी गली
बढ़ गए पग किन्तु सहसा
और मन भी बढ गया
लोक-लीकों के सभी भ्रम एक पल में ढह गए
गीत प्राणों में जगे , पर भावना में बह गए ।

वह मधुर बेला प्रतीक्षा की, मधुर मनुहार थी
मैं चकित साभार थी
कह नहीं सकती हृदय की जीत थी, या हार थी
वेदना सुकुमार थी
मौन तो वाणी रही पर
भेद मन का खुल गया
जो न कहना चाहती थी, ये नयन सब कह गए

कल्पना जिसकी संजोयी, सामने ही पा गई
वह घड़ी भी आ गई
छवि अनोखी थी हृदय पर छा गई, मन भा गई
देखते शरमा गई
कर सकी मनुहार भी कब
मैं स्वयं में खो गई
और अब तो प्राण मेरे कुछ ठगे से रह गए
गीत प्राणों में जगे , पर भावना में बह गए ।

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

****